गृह पूजा/ गृह प्रवेश पूजा की आदि कथा एवं महात्मय

संकलन

डा| यतेन्द्र शर्मा

प्रकाशक

श्री राम कथा संस्थान पर्थ

ऑस्ट्रेलिआ – ६०२५

क्रमावली

१.० गृह पूजा/ गृह प्रवेश पूजा की आदि कथा एवं महात्मय..... 3

२.० गृह प्रवेश पूजा विधि 9

२.१ गुरु ध्यान..... 10

२.२ प्रथम पूज्य विघ्न विनाशक गणेश ध्यान..... 14

२.३ कुलदेवी ध्यान..... 15

२.४ भगवान् विष्णु ध्यान/ अथवा हवन आदि 18

२.५ नारायण आरती 28

१. गृह पूजा/ गृह प्रवेश पूजा की आदि कथा एवं महात्मय

अक्सर लोगों को, विशेषतः युवा पीढ़ी को, यह जानने की उत्सुकता रहती है कि हमें गृह पूजा अथवा गृह प्रवेश पूजा की आवश्यकता क्या है? यह समझने के लिए हमें अपने शास्त्रों द्वारा पूर्व इतिहास का स्मरण करना चाहिए।

भारत एक विशाल देश है। देश के हर क्षेत्र में कोई भी उत्सव/ पर्व/ अनुष्ठान/ धार्मिक संस्कार मनाने के अपने अपने क्षेत्रीय कारण हैं। इसी लिए किसी एक विशेष उत्सव/ पर्व/ अनुष्ठान/ धार्मिक संस्कार का कोई केवल एक विशेष कारण नहीं है। संतों की वाणी एवं उत्तर भारत में प्रचलित शास्त्रों के अनुसार जो गृह प्रवेश पूजा एवं गृह पूजा का कारण और विशेष महत्व है, उसका यहां उल्लेख किया जा रहा है।

संतों की वाणी एवं उत्तर भारत में प्रचलित शास्त्रों के अनुसार, गृह पूजा/ गृह प्रवेश पूजा प्रथा का चलन मुख्यतः आज से करीबन ५,००० वर्ष पूर्व कलि युग के प्रारम्भ से हुआ। कलियुग के प्रथम सम्राट शिरोमणी परीक्षित जी हुए। आप सभी जानते हैं कि जब कलियुग का आगमन हुआ तो भारतवर्ष में सत्य धर्म पालनहार, धर्म के अनुयायी एवं न्याय प्रिय सम्राट शिरोमणी परीक्षित जी का शासन था। ऐसे सतयुग जैसे वातावरण में कलि को कोई निवास नहीं मिल पा रहा था। एक दिन राजा परीक्षित ने सुना कि कलियुग उनके राज्य में घुस आया है और अधिकार जमाने का मौका ढूँढ़ रहा है। वे उसे अपने राज्य से निकाल बाहर करने के लिये ढूँढ़ने निकले। एक दिन इन्होंने देखा कि एक गाय और एक बैल अनाथ और कातर भाव से खड़े हैं, और एक शूद्र जिसका वेष, भूषण और ठाट-बाट राजा के समान था, डंडे से उनको मार रहा है। बैल के केवल एक पैर था। पूछने पर सम्राट शिरोमणी परीक्षित जी को बैल, गाय और राजवेषधारी शूद्र तीनों ने अपना अपना परिचय दिया। गाय पृथ्वी थी, बैल धर्म था और शूद्र कलिराज। धर्मरूपी बैल

के सत्य, तप और दयारूपी तीन पैर कलियुग ने मारकर तोड़ डाले थे। केवल एक पैर दान के सहारे वह खड़ा था और अपनी रक्षा कर रहा था। उसको भी तोड़ डालने के लिये कलियुग बराबर उसका पीछा कर रहा था। यह वृत्तांत जानकर सम्राट शिरोमणी परीक्षित जी को कलियुग पर बड़ा क्रोध आया और वे उसको मार डालने को उद्यत हुए। कलि गिड़गिड़ा कर उनके चरणों में पड़ गया। सम्राट शिरोमणी परीक्षित जी को उसपर दया आ गई। कलि ने अत्यंत गिड़गिड़ा कर कहा, महाराज आप तो अत्यंत ज्ञानी हैं। द्वापर समाप्त हुया और अब मेरा युग है। मैं जानता हूँ कि आपको अनीति सहन नहीं है और संभवतः यह मेरा चरित्र है। अतः आप ही कोई ऐसा स्थान मुझे बताइये जहां मैं अपने इस दुर्गुण सहित निवास कर सकूं। तब सम्राट शिरोमणी परीक्षित जी ने उसके रहने के लिये ये पांच स्थान बताये - जुआ, स्त्री, मद्य, हिंसा और सोना। कलि ने इसे स्वीकार किया तथा इन पाँच स्थानों को छोड़कर अन्यत्र न रहने की कलि ने प्रतिज्ञा की। सम्राट शिरोमणी परीक्षित जी ने पाँच स्थानों के साथ साथ ये छै वस्तुएँ अतिरिक्त भी उसे दे डालीं—मिथ्या, मद, काम, लोभ , हिंसा और बैर।

अब काल का चक्र देखिये। इस घटना के कुछ समय बाद महाराज परीक्षित एक दिन आखेट करने निकले। कलियुग तो बराबर इस ताक में था कि किसी भी प्रकार सम्राट शिरोमणी परीक्षित जी का खटका मिटाकर अकंटक राज करे। सम्राट शिरोमणी परीक्षित जी के मुकुट में सोना था ही, कलियुग उसमें घुस गया। और उसने सम्राट शिरोमणी परीक्षित जी की बुद्धि पलट दी।

आखेट करते हुए सम्राट शिरोमणी परीक्षित जी ने एक हिरन के पीछे अपना घोड़ा लगा दिया। बहुत दूर तक पीछा करने पर भी वह हिरन न मिला। थकावट के कारण उन्हें भूख और प्यास लग रही थी। एक मुनि आश्रम दिखाई दिया। यह एक वृद्ध मुनि महाऋषी शमीक जी का आश्रम था। महाऋषी ध्यान में मग्न थे। राजा ने ध्यानमग्न महाऋषी से जल माँगा। ध्यानमग्न मुनि को सम्राट शिरोमणी परीक्षित जी की आवाज़ सुनायी ही

नहीं दी। कलि के प्रभाव से राजा की बुद्धि भ्रमित हो चुकी थी। थके और प्यासे सम्राट परीक्षित को मुनि के इस व्यवहार से बड़ा क्रोध हुआ। कलि के प्रभाव से सम्राट परीक्षित ने सोचा कि मुनि ने घमंड के कारण हमारी बात का जवाब नहीं दिया है और इस अपराध का उन्हें कुछ दंड देना चाहिए। पास ही एक मरा हुआ साँप पड़ा था। सम्राट परीक्षित ने कमान की नोक से उसे उठाकर मुनि के गले में डाल दिया और अपनी राह ली। मुनि के श्रृंगी नाम के एक महातेजत्वी पुत्र थे। वह स्नान ध्यानादि करने पास की नदी में गए हुए थे। जब आश्रम लौटे तो पिता के गले में मृतक सर्प देख क्रोध में आ गए। कोपशील महाऋषी श्रृंगी पिता के इस अपमान को सहन नहीं कर पाए और उन्होंने कमंडल से जल लेकर शाप दिया कि जिस पापात्मा ने मेरे पिता के गले में मृत सर्प की माला पहनाया है, आज से सात दिन के भीतर तक्षक नाम का सर्प उसे डस ले। पिता के ध्यानावस्था से वापस आने पर पुत्र श्रंगी ने उपर्युक्त उग्र शाप सम्राट शिरोमणी परीक्षित जी को देने की बात कही। महाऋषी को पुत्र के अविवेक पर दुःख हुआ और उन्होंने एक शिष्य द्वारा सम्राट परीक्षित को शाप का समाचार कहला भेजा जिसमें वे सतर्क रहें। सम्राट परीक्षित ने ऋषि के शाप को अटल समझकर अपने पुत्र जनमेजय को राजगद्दी पर बिठा दिया और सब प्रकार से मरने के लिये तैयार होकर अनशन व्रत करते हुए भगवान् महाऋषी श्री शुकदेव जी से श्रीमद् भागवत की कथा सुनी। सातवें दिन तक्षक ने आकर उन्हें डस लिया और विष की भयंकर ज्वाला से उनका शरीर भस्म हो गया।

पौराणिक कथा प्रचलित है कि जब सम्राट परीक्षित को तक्षक डसने जा रहा था तब मार्ग में उसे कश्यप ऋषि मिले जो हस्तिनापुर (सम्राट परीक्षित की राजधानी) जा रहे थे। ब्राह्मण का वेश बनाकर तक्षक महाऋषी कश्यप के समक्ष आकर उनका हस्तिनापुर जाने का उद्देश्य पूछने लगा। मालूम हुआ कि वे उसके विष से सम्राट परीक्षित की रक्षा करने जा रहे हैं। तब तक्षक अपने असली वेश में आये और उन्होंने एक वृक्ष पर दाँत मारा। वह तत्काल जलकर भस्म हो गया। महाऋषी कश्यप ने अपनी विद्या से फिर उसे हरा कर दिया। यह देख कलि और तक्षक दोनों ही घबरा गए। तभी

कलि की सहायता से तक्षक ने जाना कि महाऋषी कश्यप धन लोभ से सम्राट परीक्षित के पास जा रहें हैं। तुरंत कलि महाऋषी कश्यप के सर पर सवार हो गए। स्वयं सम्राट परीक्षित ने लोभ गृह में उनके आवास की अनुमति दी थी। इसपर तक्षक ने बहुत सा धन देकर उन्हें लौटा दिया।

शाप का समाचार पाकर सम्राट परीक्षित ने तक्षक से अपनी रक्षा करने के लिये एक सात मंजिल ऊँचा मकान बनवाया और उसके चारों ओर अच्छे अच्छे सर्प-मंत्र-ज्ञाता और मुहरा रखने वालों को तैनात कर दिया। तक्षक को जब यह मालूम हुआ तब वह घबराया। अंत को सम्राट परीक्षित तक पहुँचने का उसे एक उपाय सूझ पड़ा। उसने एक अपने सजातीय सर्प को तपस्वी का रूप देकर उसके हाथ में कुछ फल दे दिए और एक फल में एक अति छोटे कीड़े का रूप धरकर आप जा बैठा। तपस्वी बना हुआ सर्प तक्षक के आदेश के अनुसार परीक्षित के उपर्युक्त सुरक्षित प्रासाद तक पहुँचा। सम्राट ने उस से फल लेकर उसे बिदा कर दिया। एक तपस्वी मेरे लिये यह फल दे गया है, अतः इसके खाने से अवश्य ही मेरा उपकार होगा, यह सोचकर उन्होंने उस फल को अपने खाने के लिये काटा। उसमें से एक छोटा कीड़ा निकला जिसका रंग तामड़ा और आँखें काली थीं। सम्राट परीक्षित ने मंत्रियों से कहा कि सूर्य अस्त हो रहा है, अब तक्षक से मुझे कोई भय नहीं। परन्तु ब्राह्मण के शाप की मान रक्षा करना चाहिए। इसलिये इस कीड़े से डसने की विधि पूरी करा लेता हूँ। यह कहकर उन्होंने उस कीड़े को गले से लगा लिया। सम्राट परीक्षित के गले से स्पर्श होते ही वह नन्हा सा कीड़ा भयंकर सर्प हो गया और उसके दंशन के साथ परीक्षित का शरीर भस्मसात् हो गया। इस समय सम्राट परीक्षित की अवस्था ९६ वर्ष की थी।

परीक्षित की मृत्यु के बाद फिर कलियुग की रोक टोक करने वाला कोई न रहा और वह उसी दिन से अकंटक भाव से शासन करने लगा।

सम्राट जनमेजय इस प्रकरण से बहुत आहत हुये। उन्होंने सारे सर्पवंश का समूल नाश करने का निश्चय किया। इसी उद्देश्य से उन्होंने सर्प सत्र या सर्प यज्ञ के आयोजन का निश्चय किया। यह यज्ञ इतना भयंकर था कि

विश्व के सारे सर्पों का महाविनाश होने लगा। उस समय एक बाल ऋषि अस्तिक उस यज्ञ परिसर में आये। उनकी माता मानसा एक नाग थीं तथा उनके पिता एक ब्राह्मण थे। बाल ऋषी अस्तिक ने सम्राट जन्मेजय से करबद्ध इस विनाशकारी यज्ञ को रोकने की प्रार्थना की। अस्तिक के आग्रह के कारण जनमेजय ने सर्प सत्र या यज्ञ तो समाप्त कर दिया परन्तु उनसे एक निवेदन किया। कलि के कारण मेरे पिता की बुद्धि भ्रम हुयी क्योंकि उन्होंने स्वर्ण मुकुट धारण किया हुआ था। कलि के ही कारण महाऋषी कश्यप जो मेरे पिता को बचा सकते थे, लोभ वश धन की प्राप्ति कर वापस चले गए। अब सांसारिक व्यक्तियों के पास स्वर्ण भी होगा ही। लोभ से भी बचना असंभव। अतः कलि से कैसे रक्षा की जा सकती है?

तब बाल महाऋषी अस्तिक जी ने भगवान् वेद व्यास जी के परम शिष्य महाऋषी वैशम्पायन जी का आवाहन किया। महाऋषी वैशम्पायन जी तब वहां पधारे।

महाऋषी वैशम्पायन जी ने तब स्वयं रचित भगवान् विष्णु सहस्त्रनाम स्तोत्रम का उल्लेख करते हुए वरदान दिया कि जो भी नर नारी गृह प्रवेश समय अथवा किसी भी समय गृह में शुद्ध हृदय से इस भगवान् विष्णु सहस्त्रनाम स्तोत्रम का जाप करेगा उसके गृह में कलि का वास नहीं होगा तथा विष्णुसहस्रनाम का पाठ करने वाले व्यक्ति को यश, सुख, ऐश्वर्य, संपन्नता, सफलता, आरोग्य एवं सौभाग्य प्राप्त होता है तथा मनोकामनाओं की पूर्ति होगी।

नमो स्तवन अनंताय सहस्त्र मूर्तये, सहस्त्रपादाक्षि शिरोरु बाहवे।
सहस्त्र नाम्ने पुरुषाय शाश्वते, सहस्त्रकोटि युग धारिणे नमः॥

और इस तरह से प्रारम्भ हुया गृह पूजा अथवा गृह प्रवेश पूजा का धार्मिक संस्कार।

कालांतर में विष्णु सहस्त्रनामस्तोत्रम का स्थान यज्ञ एवं भगवान् के अन्य स्वरूपों की पूजन विधियों ने ले लिया। महाऋषी वैशम्पायन जी के कथनानुसार यज्ञ/ हवन अथवा किसी भी रूप में शुद्ध हृदय से भगवत पूजन का प्रभाव भगवान् विष्णु सहस्त्रनाम समान ही है।

इस पूजन का विशेष महत्व हमारे महाऋषियों द्वारा बताये हुए रास्ते पर चलते हुए गृह शांति एवं कलि के दुर्गणों से हमें दूर रखने के लिए है।

ऐसी मान्यता है कि जो भी नर नारी गृह प्रवेश समय एवं वर्ष में एक बार भी अपने गृह में इस पूजन को विधि पूर्वक स्वयं, मित्र अथवा ज्ञानी पंडित के द्वारा करवाता है, उसे सभी प्रकार की सुख, शांति, वैभवता, समृद्धि एवं ऐष्वर्य की प्राप्ति होती है तथा कलि का दुष्प्रभाव नहीं व्याप्त। लक्ष्मी का स्थाई निवास रहता है। गृह में धन से संबंधित ऋण आदि की समस्याओं का सामना नहीं करना पडता है। घर का वातावरण भी शांत एवं सुखदाई होता है। बीमारियों से बचाव होता है। घर में रहने वाले लोग प्रसन्नता, आनंद आदि का अनुभव करते है। किसी भी प्रकार के अमंगल, अनिष्ट आदि होने की संभावना समाप्त हो जाती है। घर में देवी-देवताओं का वास होता है और उनके प्रभाव से भूत-प्रेतादि आदि नकारात्मक प्रवर्तियों का अंत हो जाता है तथा वह किसी प्रकार की बाधाएं नहीं डालती।

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

२. गृह प्रवेश पूजा विधि

विभिन्न ग्रंथों एवं क्षेत्रीय परम्पराओं में गृह प्रवेश पूजा की भिन्न भिन्न विधिओं का विधि-विधान बतलाया है। उत्तम तो यही होगा कि आप अपने क्षेत्र के आचार्य से संपर्क कर, उनके मार्ग दर्शन से उचित विधि से गृह प्रवेश करें। अगर किसी कारण आचार्य से संपर्क न हो पाए, तो निम्न विधि से गृह प्रवेश पूजा करने से आपका और आपके परिवार का अवश्य ही हित होगा।

गृह के किसी एक स्थान पर जल से भरे कलश की स्थापना करें। अगर आम के पत्ते मिल सकें, तो कलश के मुख पर आम्रपत्र रखें। आम्रपत्र को हमारे शास्त्रों में अति शुभ बतलाया गया है।

विघ्नविनाशक गणेश भगवान्, विष्णु भगवान्, अपने इष्ट देव, गुरुदेव एवं कुलदेवी की मूर्ती अथवा चित्र की स्थापना करें। इस स्थान पर एक घृत दीप जलाएं। घर के सभी लोग पूजा स्थल पर उपस्थित रहें।

ऐसी मान्यता है कि अगर ये पांच मांगलिक वस्तुएं - नारियल, हल्दी, गुड़, चावल और दूध मिल सके, तो उसे पूजा की थाली में रख दें।

२.१ गुरु ध्यान

सर्व प्रथम गुरुदेव का ध्यान करें। याद रक्खें:

गुरु गोविन्द दोनों खड़े काके लागूं पाँय।
बलिहारी गुरु आपने, गोविन्द दिओ बताय॥

हमारे शास्त्रों में ऐसी मान्यता है कि गुरु दो प्रकार के होते हैं - अनियत और नियत। अनियत गुरु की श्रेणी में वह गुरुदेव आते हैं जिनसे आपने दीक्षा ली है अथवा हृदय में उन्हें अपना गुरु मान रक्खा है। अनियत गुरु जीवित अथवा सूक्ष्म दशा (समाधि पश्चात) में हो सकते हैं। सर्व प्रथम उनका हृदय में ध्यान लगाएं।

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु र्गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरु साक्षात परब्रह्मा तस्मै श्रीगुरवे नमः॥

हे गुरु आप सृष्टिकर्ता ब्रह्मा, संरक्षक गुरु विष्णु एवं विनाशक महादेव के समान हैं। मैं इन त्रिदेव की भाँति आपको सर्वोच्च ब्रह्म मान आपकी स्तुति करता हूँ। प्रभु मेरा अंधकार मिटाइये।

इसके पश्चात आप गुरुदेव की अगर कोई विशेष स्तुति हो, तो उसका उच्चारण कर गुरुदेव को प्रणाम करें। उदाहरण के तौर पर अगर आपके गुरुदेव श्री शिरडी साई नाथ हैं, तो उनकी निम्न स्तुति करें।

घेउनियां पंचारती। करुं बाबांसी आरती॥
करुं साई सी आरती॥ 1॥
उठा उठा हो बांधव। ओंवाळूं हा रमाधव॥
सांई हा रमाधव॥ ओंवाळूं हा रमाधव॥ 2॥
करुनीयां स्थीर मन। पाहूं गंभीर हें ध्यान॥

साईचें हें ध्यान॥ पाहूं गंभीर हें ध्यान ॥ 3 ॥
कृष्णनाथा दत्तसाई । जडो चित्त तुझे पायीं ॥
साई तुझे पायीं ॥ जडो चित्त तुझे पायीं ॥ 4 ॥

अनियत गुरु को प्रणाम करने के बाद नियत गुरु को प्रणाम करना आवश्यक माना जाता है। नियत गुरु वह होते हैं जो हमें प्रकृति ने दिए हैं। नियत गुरु सभी के गुरु होते हैं, यहां तक कि आपके द्वारा चुने हुए अनियत गुरु देव के भी। नियत गुरु की श्रेणी में आपके विशेष इष्टदेव आते हैं। जैसे कि त्रिदेवों - ब्रह्मा, विष्णु, महेश, में से एक देव। अथवा इनके अवतारों में से कोई एक जैसे - भगवान् श्री राम या श्री कृष्ण या हनुमान जी इत्यादि। अथवा माताओं में से कोई एक जैसे - माँ गौरी अथवा माँ लक्ष्मी अथवा माँ सरस्वती या इनके अवतारों में से कोई एक। जिस में भी आपकी आस्था हो, उनका ध्यान करें और उनके प्रति समर्पित स्तुति।

उदाहरण के तौर पर अगर आप हनुमान जी को अपना इष्ट देव मानते हैं और इष्टदेव मानकर उनको नियत गुरु के आसान पर बैठाते हैं, तो उनकी हनुमान चालीसा के रूप में स्तुति आवश्यक मानी जाती है।

श्री गुरु चरण सरोज रज, निज मन मुकुरु सुधारि।
बरनऊं रघुवर बिमल जसु, जो दायकु फल चारि॥

श्री हनुमान जी गुरु महाराज के चरण कमलों की धूलि से अपने मन रूपी दर्पण को पवित्र करके श्री रघुवीर के निर्मल यश का वर्णन करता हूं, जो चारों फल धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष को देने वाला है।

जय हनुमान ज्ञान गुण सागर, जय कपीस तिहुं लोक उजागर ॥1॥
राम दूत अतुलित बलधामा, अंजनी पुत्र पवन सुत नामा ॥2॥
महावीर विक्रम बजरंगी, कुमति निवार सुमति के संगी ॥3॥
हाथबज्र और ध्वजा विराजे, कांधे मूंज जनेऊ साजै ॥5॥

शंकर सुवन केसरी नंदन, तेज प्रताप महा जग वंदन ॥6॥
विद्यावान गुणी अति चातुर, राम काज करिबे को आतुर ॥7॥
प्रभु चरित्र सुनिबे को रसिया, राम लखन सीता मन बसिया ॥8॥
सूक्ष्म रूप धरि सियहिं दिखावा, बिकट रूप धरि लंक जरावा ॥9॥
भीम रूप धरि असुर संहारे, रामचन्द्र के काज संवारे ॥10॥
लाय सजीवन लखन जियाये, श्री रघुवीर हरषि उर लाये ॥11॥
रघुपति कीन्हीं बहुत बड़ाई, तुम मम प्रिय भरत सम भाई ॥12॥
सहस बदन तुम्हरो जस गावैं। अस कहि श्रीपति कंठ लगावैं ॥13॥
सनकादिक ब्रह्मादि मुनीसा, नारद, सारद सहित अहीसा ॥14॥
जम कुबेर दिगपाल जहां ते, कबि कोबिद कहि सके कहां ते ॥15॥
तुम उपकार सुग्रीवहि कीन्हा, राम मिलाय राजपद दीन्हा ॥16॥
तुम्हरो मंत्र विभीषण माना, लंकेस्वर भए सब जग जाना ॥17॥
जुग सहस्त्र जोजन पर भानू, लील्यो ताहि मधुर फल जानू ॥18॥
प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माहि, जलधि लांघि गये अचरज नाहीं ॥19॥
दुर्गम काज जगत के जेते, सुगम अनुग्रह तुम्हरे तेते ॥20॥
राम दुआरे तुम रखवारे, होत न आज्ञा बिनु पैसारे ॥21॥
सब सुख लहै तुम्हारी सरना, तुम रक्षक काहू को डरना ॥22॥
आपन तेज सम्हारो आपै, तीनों लोक हांक तें कांपै ॥23॥
भूत पिशाच निकट नहिं आवै, महावीर जब नाम सुनावै ॥24॥
नासै रोग हरै सब पीरा, जपत निरंतर हनुमत बीरा ॥25॥
संकट तें हनुमान छुड़ावै, मन क्रम बचन ध्यान जो लावै ॥26॥
सब पर राम तपस्वी राजा, तिनके काज सकल तुम साजा ॥27॥
और मनोरथ जो कोइ लावै, सोई अमित जीवन फल पावै ॥28॥
चारों जुग परताप तुम्हारा, है परसिद्ध जगत उजियारा ॥29॥
साधु सन्त के तुम रखवारे, असुर निकंदन राम दुलारे ॥30॥
अष्ट सिद्धि नौ निधि के दाता, अस बर दीन जानकी माता ॥31॥
राम रसायन तुम्हरे पासा, सदा रहो रघुपति के दासा ॥32॥
तुम्हरे भजन राम को पावै, जनम जनम के दुख बिसरावै ॥33॥
अन्त काल रघुबर पुर जाई, जहां जन्म हरि भक्त कहाई ॥34॥

और देवता चित न धरई, हनुमत सेई सर्व सुख करई ॥35॥
संकट कटै मिटै सब पीरा, जो सुमिरै हनुमत बलबीरा ॥36॥
जय जय जय हनुमान गोसाई, कृपा करहु गुरु देव की नाई ॥37॥
जो सत बार पाठ कर कोई, छूटहि बंदि महा सुख होई ॥38॥
जो यह पढ़ै हनुमान चालीसा, होय सिद्धि साखी गौरीसा ॥39॥
तुलसीदास सदा हरि चेरा, कीजै नाथ हृदय मंह डेरा ॥40॥

पवन तनय संकट हरन, मंगल मूरति रूप।
राम लखन सीता सहित, हृदय बसहु सूरभूप ॥

२.२ प्रथम पूज्य विघ्न विनाशक गणेश ध्यान

गुरु पूजा/ स्तुति के बाद प्रथम पूजित देव विघ्ननाशक श्री गणेश भगवान् की स्तुति करने का प्रावधान है। अतः श्री गणेश स्तुति करें।

ओं श्री गणेशाय नमः।

ओं वक्रतुन्ड महाकाया, सूर्य कोटि समप्रभः।
निर्विघ्नम कुरू मे देव, शुभ कार्येशू सर्वदा ॥

गाइये गनपति जगबंदन, संकर-सुवन भवानी-नंदन।
सिद्ध-सिदन, गज-बदन, विनायक, कृपा-सिंधु, सुंदर सब-लायक ॥
मोदक-प्रिय मुद-मंगल-दाता, विद्या-वारि बुद्धि-विधाता।
माँगत तुलसिदास कर जोरे, बसहिं रामसिय मानस मोरे ॥

२.३ कुलदेवी ध्यान

गणेश स्तुति के पश्चात कुलदेवी की स्तुति का शास्त्रों में प्रावधान किया गया है।

भारत में हिन्दू पारिवारिक आराध्य व्यवस्था में कुलदेवी का स्थान सदैव से अति उच्च रहा है। प्रत्येक हिन्दू परिवार किसी न किसी अवतार/ ऋषि के वंशज हैं जिनसे उनके गोत्र का पता चलता है। हर जाति वर्ग किसी न किसी अवतार/ ऋषि की संतान हैं और उन मूल अवतार/ ऋषि से उत्पन्न संतान के लिए वे अवतार/ ऋषि पत्नी कुलदेवी के रूप में पूज्य हैं। जीवन में कुलदेवी का स्थान सर्वश्रेष्ठ है | आर्थिक सुलभता, कौटुंबिक सौख्य और शांति तथा आरोग्य के विषय में कुलदेवी की कृपा का निकटतम संबंध पाया गया है।

पूर्व के हमारे कुलों अर्थात पूर्वजों के खानदान के वरिष्ठों ने अपने लिए उपयुक्त कुलदेवी का चुनाव कर उन्हें पूजित करना शुरू किया था, ताकि एक आध्यात्मिक और पारलौकिक शक्ति कुलों की रक्षा करती रहे जिससे उनकी नकारात्मक शक्तियों / ऊर्जाओं और बाधाओं से रक्षा होती रहे तथा वे निर्विघ्न अपने कर्म पथ पर अग्रसर रह उन्नति करते रहें।

कुलदेवी दरअसल कुल या वंश की रक्षक देवी होती हैं। ये घर परिवार या वंश परम्परा की प्रथम पूज्य तथा मूल अधिकारी देवी होती हैं। सर्वाधिक आत्मीयता के अधिकारी इन देवियों को आप घर के बुजुर्ग सदस्यों जैसा महत्वपूर्ण मान सकते हैं। अतः इनकी उपासना या महत्व दिए बगैर सारी पूजा एवं अन्य कार्य व्यर्थ हो सकते है।

इनका प्रभाव इतना महत्वपूर्ण होता है कि ऐसा माना जाता है कि यदि ये रुष्ट हो जाए तो अन्य कोई देवी/ देवता इनकी रुष्टता के दुष्प्रभाव द्वारा हानि को कम अथवा रोक नही सकते। इसे यूं समझे – यदि घर का मुखिया

पिताजी/ माताजी आपसे नाराज हो तो पड़ोस के या बाहर का कोई भी आपके भले के लिए आपके घर में प्रवेश नही कर सकता।

कुलदेवी हमारे वह सुरक्षा आवरण हैं जो किसी भी बाहरी बाधा, नकारात्मक ऊर्जा के परिवार में अथवा व्यक्ति पर प्रवेश से पहले सर्वप्रथम उससे संघर्ष करते हैं और उसे रोकते हैं। यह पारिवारिक संस्कारों और नैतिक आचरण के प्रति भी समय समय पर सचेत करते रहते हैं। यही किसी भी इष्टदेव को दी जाने वाली पूजा को इष्टदेव तक पहुँचाते हैं। इष्टदेव के अप्रसन्न होने का कारण अधिकतम यही होता है कि उनके माध्यम, कुलदेवी की पूजा नहीं हो पाती और इस तरह इष्टदेव तक पूजा पहुँच ही नहीं पाती। प्रायः ऐसा देखा गया है कि जिन घरो में कलह रहती है, वंशावली आगे नहीं बढ रही है (निर्वंशी हो रहे हों), आर्थिक उन्नति नहीं हो रही है अथवा अकाल मौतें हो रही हो, वहां कुलदेवी के पूजन का अभाव है।

अतः हर शुभ अवसर पर कुलदेवी का पूजन अत्यंत आवश्यक है, ऐसा हमारे शास्त्र कहते हैं।

अगर आपको अपनी कुलदेवी का पता है तो उनकी विधिवत पूजा कीजिए। अगर किसी कारण आपको अपनी कुलदेवी के बारे में ज्ञान नहीं है तो आप अपने इष्ट देव की पूज्या कुलदेवी अथवा अपने इष्टदेव की पत्नी को कुलदेवी मान सकते हैं। उदाहरण के तौर पर अगर आपके इष्ट देव हनुमान जी हैं तो हनुमान जी कि इष्टदेवी माँ सीता हैं, अतः आप भी माँ सीता को अपनी कुलदेवी मान सकते हैं।

अगर सीता माँ आपकी कुलदेवी हैं तो उनका निम्न प्रकार स्मरण कीजिए।

सीता - स्तुति

भई प्रगट कुमारी भूमि-विदारी जन हितकारी भयहारी।
अतुलित छबि भारी मुनि-मनहारी जनकदुलारी सुकुमारी॥

सुन्दर सिंहासन तेहिं पर आसन कोटि हुताशन द्युतिकारी।
सिर छत्र बिराजै सखि संग भ्राजै निज -निज कारज करधारी॥

सुर सिद्ध सुजाना हनै निशाना चढ़े बिमाना समुदाई।
बरषहिं बहुफूला मंगल मूला अनुकूला सिय गुन गाई॥

देखहिं सब ठाढ़े लोचन गाढ़ें सुख बाढ़े उर अधिकाई।
अस्तुति मुनि करहीं आनन्द भरहीं पायन्ह परहीं हरषाई॥

ऋषि नारद आये नाम सुनाये सुनि सुख पाये नृप ज्ञानी।
सीता अस नामा पूरन कामा सब सुखधामा गुन खानी॥

सिय सन मुनिराई विनय सुनाई सतय सुहाई मृदुबानी।
लालनि तन लीजै चरित सुकीजै यह सुख दीजै नृपरानी॥

सुनि मुनिबर बानी सिय मुसकानी लीला ठानी सुखदाई।
सोवत जनु जागीं रोवन लागीं नृप बड़भागी उर लाई॥

दम्पति अनुरागेउ प्रेम सुपागेउ यह सुख लायउँ मनलाई।
अस्तुति सिय केरी प्रेमलतेरी बरनि सुचेरी सिर नाई॥

निज इच्छा मखभूमि ते प्रगट भई सिय आय।
चरित किये पावन परम बरधन मोद निकाय॥

२.४ भगवान् विष्णु ध्यान/ अथवा हवन आदि

इसके पश्चात भगवान् विष्णु का ध्यान करें। भगवान् विष्णु के ध्यान के लिए भगवान् वेद व्यास द्वारा रचित श्रीविष्णुसहस्त्रनामस्त्रोतं का जाप करें। इसके स्थान पर आप हवन आदि भी कर सकते हैं लेकिन शास्त्रों में प्राथमिकता श्रीविष्णुसहस्त्रनामस्त्रोतं के जाप की दी गई है। अगर भगवान् वेद व्यास द्वारा संस्कृत में रचित विष्णुसहस्त्रनामस्त्रोतं के उच्चारण में कठिनाई हो तो डॉ यतेंद्र शर्मा द्वारा रचित 'भगवान् श्री विष्णु सहस्त्र नाम काव्य' का पाठ करें। यह काव्य सरल हिंदी में चोपाईओं में रचित भगवान् विष्णु के सहस्त्र नामों की मनमोहक व्याख्या है। इसको निम्न वेबसाइट से डाउनलोड किया जा सकता है।

https://shriramkatha.org

भगवान् विष्णु सहस्त्रनामस्तोत्रम्

ॐ श्री परमात्मने नमः । ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

यस्य स्मरणमात्रेण जन्मसंसारबन्धनात् ।
विमुच्यते नमस्तमै विष्णवे प्रभविष्णवे ॥
नमः समस्तभूतानामादिभूताय भूभृते ।
अनेकरुपरुपाय विष्णवे प्रभविष्णवे ॥

वैशम्पायन उवाच

श्रुत्वा धर्मानशेषेण पावनानि च सर्वशः ।
युधिष्टिरः शान्तनवं पुनरेवाभ्यभाषत ।१।

युधिष्टिर उवाच

किमेकं दैवतं लोके किं वाप्येकं परायणम् ।
स्तुवन्तः कं कमर्चन्तः प्राप्नुयुर्मानवाः शुभम् ।२।
को धर्मः सर्वधर्माणां भवतः परमो मतः ।
किं जपन्मुच्यते जन्तुर्जन्मसंसारबन्धनात् ।३।

भीष्म उवाच

जगत्प्रभुं देवदेवमनन्तं पुरुषोत्तमम् ।
स्तुवन्नामसहस्त्रेण पुरुषः सततोत्थितः ।४।
तमेव चार्चयन्नित्यं भक्त्या पुरुषमव्ययम् ।
ध्यायन्स्तुवन्नमस्यंश्च यजमानस्तमेव च ।५।
अनादिनिधनं विष्णुं सर्वलोकमहेश्वरम् ।
लोकाध्यक्षं स्तुवन्नित्यं सर्वदुःखातिगो भवेत् ।६।
ब्रह्मण्यं सर्वधर्मज्ञं लोकानां कीर्तिवर्धनम् ।
लोकनाथं महद्भूतं सर्वभूतभवोद्भवम् ।७।

एष मे सर्वधर्माणां धर्माऽधिकतमो मतः।
यद्भक्त्या पुण्डरीकाक्षं स्तवैरर्चेन्नरः सदा।८।
परमं यो महत्तेजः परमं यो महत्तपः।
परमं यो महद्ब्रह्म परमं यः परायणम्।९।
पवित्राणां पवित्रं यो मङ्गलानां च मङ्गलम्।
दैवतं देवतानां च भूतानां योऽव्ययः पिता।१०।
यतः सर्वाणि भूतानि भवन्त्यादियुगागमे।
यस्मिंश्च प्रलयं यान्ति पुनरेव युगक्षये।११।
तस्य लोकप्रधानस्य जगन्नाथस्य भूपते।
विष्णोर्नामसहस्रं मे शृणु पापभयापहम्।१२।
यानि नामानि गौणानि विख्यातानि महात्मनः।
ऋषिभिः परिगीतानि तानि वक्ष्यामि भूतये।१३।

अथ श्रीविष्णुसहस्रनामम्

ॐ विश्वं विष्णुर्वषट्कारो भूतभव्यभवत्प्रभुः।
भूतकृद्भूतभृद्भावो भूतात्मा भूतभावनः।१४।
पूतात्मा परमात्मा च मुक्तानां परमा गतिः।
अव्ययः पुरुषः साक्षी क्षेत्रज्ञोऽक्षर एव च।१५।
योगो योगविदां नेता प्रधानपुरुषेश्वरः।
नारसिंहवपुः श्रीमान्केशवः पुरुषोत्तमः।१६।
सर्वः शर्वः शिवः स्थाणुर्भूतादिर्निधिरव्ययः।
सम्भवो भावनो भर्ता प्रभवः प्रभुरीश्वरः।१७।
स्वयम्भूः शम्भुरादित्यः पुष्कराक्षो महास्वनः।
अनादिनिधनो धाता विधाता धातुरुत्तमः।१८।
अप्रमेयो हृषीकेशः पद्मनाभोऽमरप्रभुः।
विश्वकर्मा मनुस्त्वष्टा स्थविष्ठः स्थविरो ध्रुवः।१९।
अग्राह्यः शाश्वतः कृष्णो लोहिताक्षः प्रतर्दनः।
प्रभूतस्त्रिककुब्धाम पवित्रं मङ्गलं परम्।२०।
ईशानः प्राणदः प्राणो ज्येष्ठः श्रेष्ठः प्रजापतिः।
हिरण्यगर्भो भूगर्भो माधवो मधुसूदनः।२१।

ईश्वरो विक्रमी धन्वी मेधावी विक्रमः क्रमः।
अनुत्तमो दुराधर्षः कृतज्ञः कृतिरात्मवान्।२२।
सुरेशः शरणं शर्म विश्वरेताः प्रजाभवः।
अहः संवत्सरो व्यालः प्रत्ययः सर्वदर्शनः।२३।
अजः सर्वेश्वरः सिद्धः सिद्धिः सर्वादिरच्युतः।
वृषाकपिरमेयात्मा सर्वयोगविनिःसृतः।२४।
वसुर्वसुमनाः सत्यः समात्मा सम्मितः समः।
अमोघः पुण्डरीकाक्षो वृषकर्मा वृषाकृतिः।२५।
रुद्रो बहुशिरा बभ्रुर्विश्वयोनिः शुचिश्रवाः।
अमृतः शाश्वतः स्थाणुर्वरारोहो महातपाः।२६।
सर्वगः सर्वविद्भानुर्विष्वक्सेनो जनार्दनः।
वेदो वेदविदव्यङ्गो वेदाङ्गो वेदवित्कविः।२७।
लोकाध्यक्षः सुराध्यक्षो धर्माध्यक्षः कृताकृतः।
चतुरात्मा चतुर्व्यूहश्चतुर्दंष्ट्रश्चतुर्भुजः।२८।
भ्राजिष्णुर्भोजनं भोक्ता सहिष्णुर्जगदादिजः।
अनघो विजयो जेता विश्वयोनिः पुनर्वसुः।२९।
उपेन्द्रो वामनः प्रांशुरमोघः शुचिरुर्जितः।
अतीन्द्रः संग्रहः सर्गो धृतात्मा नियमो यमः।३०।
वेद्यो वैद्यः सदायोगी वीरहा माधवो मधुः।
अतीन्द्रियो महामायो महोत्साहो महाबलः।३१।
महाबुद्धिर्महावीर्यो महाशक्तिर्महाद्युतिः।
अनिर्देश्यवपुः श्रीमानमेयात्मा महाद्रिधृक।३२।
महेष्वासो महीभर्ता श्रीनिवासः सतां गतिः।
अनिरुद्धः सुरानन्दो गोविन्दो गोविदां पतिः।३३।
मरीचिर्दमनो हंसः सुपर्णो भुजगोत्तमः।
हिरण्यनाभः सुतपाः पद्मनाभः प्रजापतिः।३४।
अमृत्युः सर्वदृक् सिंहः सन्धाता सन्धिमान्स्थिरः।
अजो दुर्मर्षणः शास्ता विश्रुतात्मा सुरारिहा।३५।
गुरुर्गुरुतमो धाम सत्यः सत्यपराक्रमः।
निमिषोऽनिमिषः स्रग्वी वाचस्पतिरुदारधीः।३६।

अग्रणीर्ग्रामणीः श्रीमान्न्यायो नेता समीरणः।
सहस्रमूर्धा विश्वात्मा सहस्राक्षः सहस्रपात्।३७।
आवर्तनो निवृत्तात्मा संवृतः सम्प्रमर्दनः।
अहः संवर्तको वह्निरनिलो धरणीधरः।३८।
सुप्रसादः प्रसन्नात्मा विश्वधृग्विश्वभुग्विभुः।
सत्कर्ता सत्कृतः साधुर्जह्नुर्नारायणो नरः।३९।
असंख्येयोऽप्रमेयात्मा विशिष्टः शिष्टकृच्छुचिः।
सिद्धार्थः सिद्धसंकल्पः सिद्धिदः सिद्धिसाधनः।४०।
वृषाही वृषभो विष्णुर्वृषपर्वा वृषोदरः।
वर्धनो वर्धमानश्च विविक्तः श्रुतिसागरः।४१।
सुभुजो दुर्धरो वाग्मी महेन्द्रो वसुदो वसुः।
नैकरूपो बृहद्रूपः शिपिविष्टः प्रकाशनः।४२।
ओजस्तेजोद्युतिधरः प्रकाशात्मा प्रतापनः।
ऋद्धः स्पष्टाक्षरो मन्त्रश्चन्द्रांशुर्भास्करद्युतिः।४३।
अमृतांशूद्भवो भानुः शशविन्दुः सुरेश्वरः।
औषधं जगतः सेतुः सत्यधर्मपराक्रमः।४४।
भूतभव्यभवन्नाथः पवनः पावनोऽनलः।
कामहा कामकृत्कान्तः कामः कामप्रदः प्रभुः।४५।
युगादिकृद्युगावर्तो नैकमायो महाशनः।
अदृश्योऽव्यक्तरूपश्च सहस्रजिदनन्तजित्।४६।
इष्टोऽविशिष्टः शिष्टेष्टः शिखण्डी नहुषो वृषः।
क्रोधहा क्रोधकृत्कर्ता विश्वबाहुर्महीधरः।४७।
अच्युतः प्रथितः प्राणः प्राणदो वासवानुजः।
अपां निधिरधिष्ठानमप्रमत्तः प्रतिष्ठितः।४८।
स्कन्दः स्कन्दधरो धुर्यो वरदो वायुवाहनः।
वासुदेवो बृहद्भानुरादिदेवः पुरन्दरः।४९।
अशोकस्तारणस्तारः शूरः शौरिर्जनेश्वरः।
अनुकूलः शतावर्तः पद्मी पद्मनिभेक्षणः।५०।
पद्मनाभोऽरविन्दाक्षः पद्मगर्भः शरीरभृत्।
महर्द्धिर्ऋद्धो वृद्धात्मा महाक्षो गरुडध्वजः।५१।

अतुलः शरभो भीमः समयज्ञो हविर्हरिः।
सर्वलक्षणलक्षण्यो लक्ष्मीवान्समितिञ्जयः।५२।
विक्षरो रोहितो मार्गो हेतुर्दामोदरः सहः।
महीधरो महाभागो वेगवानमिताशनः।५३।
उद्भवः क्षोभणो देवः श्रीगर्भः परमेश्वरः।
करणं कारणं कर्ता विकर्ता गहनोगुहः।५४।
व्यवसायो व्यवस्थानः संस्थानः स्थानदो ध्रुवः।
परर्द्धिः परमस्पष्टस्तुष्टः पुष्टः शुभेक्षणः।५५।
रामो विरामो विरजो मार्गो नेयोऽनयः।
वीरः शक्तिमतां श्रेष्ठो धर्मो धर्मविदुत्तमः।५६।
वैकुण्ठः पुरुषः प्राणः प्राणदः प्रणवः पृथुः।
हिरण्यगर्भः शत्रुघ्नो व्याप्तो वायुरधोक्षजः।५७।
ऋतुः सुदर्शनः कालः परमेष्ठी परिग्रहः।
उग्रः संवत्सरो दक्षो विश्रामो विश्वदक्षिणः।५८।
विस्तारः स्थावरस्थाणुः प्रमाणं बीजमव्ययम्।
अर्थोऽनर्थो महाकोशो महाभोगो महाधनः।५९।
अनिर्विण्णः स्थविष्ठोऽभूर्धर्मयुपो महामखः।
नक्षत्रनेमिर्नक्षत्री क्षमः क्षामः समीहनः।६०।
यज्ञ इज्यो महेज्यश्च क्रतुः सत्रं सतां गतिः।
सर्वदर्शी विमुक्तात्मा सर्वज्ञो ज्ञानमुत्तमम्।६१।
सुव्रतः सुमुखः सूक्ष्मः सुघोषः सुखदः सुहृत्।
मनोहरो जितक्रोधो वीरबाहुर्विदारणः।६२।
स्वापनः स्ववशो व्यापी नैकात्मा नैककर्मकृत्।
वत्सरो वत्सलो वत्सी रत्नगर्भो धनेश्वरः।६३।
धर्मगुब्धर्मकृध्दर्मी सदसत्क्षरमक्षरम्।
अविज्ञाता सहस्त्रांशुर्विधाता कृतलक्षणः।६४।
गभस्तिनेमिः सत्त्वस्थः सिंहो भूतमहेश्वरः।
आदिदेवो महादेवो देवेशो देवभृद्गुरुः।६५।
उत्तरो गोपतिर्गोप्ता ज्ञानगम्यः पुरातनः।
शरीरभूतभृद्भोक्ता कपीन्द्रो भूरिदक्षिणः।६६।

सोमपोऽमृतपः सोमः पुरुजित्पुरुसत्तमः।
विनयो जयः सत्यसंधो दाशार्हः सात्वतां पतिः।६७।
जीवो विनयिता साक्षी मुकुन्दोऽमितविक्रमः।
अम्भोनिधिरनन्तात्मा महोदधिशयोऽन्तकः।६८।
अजो महार्हः स्वाभाव्यो जितामित्रः प्रमोदनः।
आनन्दो नन्दनो नन्दः सत्यधर्मा त्रिविक्रमः।६९।
महर्षिः कपिलाचार्यः कृतज्ञो मेदिनीपतिः।
त्रिपदस्त्रिदशाध्यक्षो महाशृङ्गः कृतान्तकृत्।७०।
महावराहो गोविन्दः सुषेणः कनकाङ्गदी।
गुह्यो गभीरो गहनो गुप्तश्चक्रगदाधरः।७१।
वेधाः स्वाङ्गोऽजितः कृष्णो दृढः संकर्षणोऽच्युतः।
वरुणो वारुणो वृक्षः पुष्कराक्षो महामनाः।७२।
भगवान् भगहानन्दी वनमाली हलायुधः।
आदित्यो ज्योतिरादित्यः सहिष्णुर्गतिसत्तमः।७३।
सुधन्वा खण्डपरशुर्दारुणो द्रविणप्रदः।
दिविस्पृक्सर्वदृग्व्यासो वाचस्पतिरयोनिजः।७४।
त्रिसामा सामगः साम निर्वाणं भेषजं भिषक्।
संन्यासकृच्छमः शान्तो निष्ठा शान्तिः परायणम्।७५।
शुभाङ्गः शान्तिदः स्रष्टा कुमुदः कुवलेशयः।
गोहितो गोपतिर्गोप्ता वृषभाक्षो वृषप्रियः।७६।
अनिवर्ती निवृत्तात्मा संक्षेप्ता क्षेमकृच्छिवः।
श्रीवत्सवक्षाः श्रीवासः श्रीपतिः श्रीमतां वरः।७७।
श्रीदः श्रीशः श्रीनिवासः श्रीनिधिः श्रीविभावनः।
श्रीधरः श्रीकरः श्रेयः श्रीमाँल्लोकत्रयाश्रयः।७८।
स्वक्षः स्वङ्गः शतानन्दो नन्दिर्ज्योतिर्गणेश्वरः।
विजितात्मा विधेयात्मा सत्कीर्तिश्छिन्नसंशयः।७९।
उदीर्णः सर्वतश्चक्षुरनीशः शाश्वतस्थिरः।
भूशयो भूषणो भूतिर्विशोकः शोकनाशनः।८०।
अर्चिष्मानर्चितः कुम्भो विशुद्धात्मा विशोधनः।
अनिरुद्धोऽप्रतिरथः प्रद्युम्नोऽमितविक्रमः।८१।

कालनेमिनिहा वीरः शौरिः शूरजनेश्वरः।
त्रिलोकात्मा त्रिलोकेशः केशवः केशिहा हरिः।८२।
कामदेवः कामपालः कामी कान्तः कृतागमः।
अनिर्देश्यवपुर्विष्णुर्वीरोऽनन्तो धनंजयः।८३।
ब्रह्मण्यो ब्रह्मकृद्ब्रह्मा ब्रह्म ब्रह्मविवर्धनः।
ब्रह्मविद्ब्राह्मणो ब्रह्मी ब्रह्मज्ञो ब्राह्मणप्रियः।८४।
महाक्रमो महाकर्मा महातेजा महोरगः।
महाक्रतुर्महायज्वा महायज्ञो महाहविः।८५।
स्तव्यः स्तवप्रियः स्तोत्रं स्तुतिः स्तोता रणप्रियः।
पूर्णः पूरयिता पुण्यः पुण्यकीर्तिरनामयः।८६।
मनोजवस्तीर्थकरो वसुरेता वसुप्रदः।
वसुप्रदो वासुदेवो वसुर्वसुमना हविः।८७।
सद्गतिः सत्कृतिः सत्ता सद्भूतिः सत्परायणः।
शूरसेनो यदुश्रेष्ठः सन्निवासः सुयामुनः।८८।
भूतावासो वासुदेवः सर्वासुनिलयोऽनलः।
दर्पहा दर्पदो दृप्तो दुर्धरोऽथापराजितः।८९।
विश्वमूर्तिर्महामूर्तिर्दीप्तमूर्तिरमूर्तिमान्।
अनेकमूर्तिरव्यक्तः शतमूर्तिः शताननः।९०।
एको नैकः सवः कः किं यत्पदमनुत्तमम्।
लोकबन्धुर्लोकनाथो माधवो भक्तवत्सलः।९१।
सुवर्णवर्णो हेमाङ्गो वराङ्गश्चन्दनाङ्गदी।
वीरहा विषमः शून्यो घृताशीरचलश्चलः।९२।
अमानी मानदो मान्यो लोकस्वामी त्रिलोकधृक्।
सुमेधा मेधजो धन्यः सत्यमेधा धराधरः।९३।
तेजोवृषो द्युतिधरः सर्वशस्त्रभृतां वरः।
प्रग्रहो निग्रहो व्यग्रो नैकशृङ्गो गदाग्रजः।९४।
चतुर्मूर्तिश्चतुर्बाहुश्चतुर्व्यूहश्चतुर्गतिः।
चतुरात्मा चतुर्भावश्चतुर्वेदविदेकपात्।९५।
समावर्तोऽनिवृत्तात्मा दुर्जयो दुरतिक्रमः।
दुर्लभो दुर्गमो दुर्गो दुरावासो दुरारिहा।९६।

शुभाङ्गो लोकसारङ्गः सुतन्तुस्तन्तुवर्धनः।
इन्द्रकर्मा महाकर्मा कृतकर्मा कृतागमः।९७।
उद्भवः सुन्दरः सुन्दो रत्ननाभः सुलोचनः।
अर्को वाजसनः शृङ्गी जयन्तः सर्वविज्जयी।९८।
सुवर्णबिन्दुरक्षोभ्यः सर्ववागीश्वरेश्वरः।
महाह्रदो महागर्तो महाभूतो महानिधिः।९९।
कुमुदः कुन्दरः कुन्दः पर्जन्यः पावनोऽनिलः।
अमृताशोऽमृतवपुः सर्वज्ञः सर्वतोमुखः।१००।
सुलभः सुव्रतः सिध्दः शत्रुजिच्छत्रुतापनः।
न्यग्रोधोदुम्बरोऽश्वत्थश्चाणूरान्ध्रनिषूदनः।१०१।
सहस्रार्चिः सप्तजिह्वः सप्तैधाः सप्तवाहनः।
अमूर्तिरनघोऽचिन्त्यो भयकृद्भयनाशनः।१०२।
अणुर्बृहत्कृशः स्थूलोगुणभृन्निर्गुणो महान्।
अधृतः स्वधृतः स्वास्यः प्राग्वंशो वंशवर्द्धनः।१०३।
भारभृत्कथितो योगी योगीशः सर्वकामदः।
आश्रमः श्रमणः क्षामः सुपर्णो वायुवाहनः।१०४।
धनुर्धरो धनुर्वेदो दण्डो दमयिता दमः।
अपराजितः सर्वसहो नियन्तानियमोऽयमः।१०५।
सत्ववान्सात्विकः सत्यः सत्यधर्मपरायणः।
अभिप्रायः प्रियार्होऽर्हः प्रियकृत्प्रीतिवर्धनः।१०६।
विहायसगतिर्ज्योतिः सुरुचिर्हुतभुग्विभुः।
रविर्विरोचनः सूर्यः सविता रविलोचनः।१०७।
अनन्तो हुतभुग्भोक्ता सुखदो नैकदोऽग्रजः।
अनिर्विण्णः सदामर्षी लोकाधिष्ठानमद्भुतः।१०८।
सनात्सनातनतमः कपिलः कपिरप्ययः।
स्वस्तिदः स्वस्तिकृत्स्वस्ति स्वस्तिभुक्स्वस्तिदक्षिणः।१०९।
अरौद्रः कुण्डली चक्री विक्रम्यूर्जितशासनः।
शब्दातिगः शब्दसहः शिशिरः शर्वरीकरः।११०।
अक्रूरः पेशलो दक्षो दक्षिणः क्षमिणां वरः।
विद्वत्तमो वीतभयः पुण्यश्रवणकीर्तनः।१११।

उत्तारणो दुष्कृतिहा पुण्यो दुःस्वप्ननाशनः।
वीरहा रक्षणः सन्तो जीवनः पर्यवस्थितः।११२।
अनन्तरुपोऽनन्तश्रीर्जितमन्युर्भयापहः।
चतुरस्त्रो गभीरात्मा विदिशो व्यादिशो दिशः।११३।
अनादिर्भूर्भुवो लक्ष्मीः सुवीरो रुचिराङ्गदः।
जननो जनजन्मादिर्भीमो भीमपराक्रमः।११४।
आधारनिलयोऽधाता पुष्पहासः प्रजागरः।
ऊर्ध्वगः सत्पथाचारः प्राणदः प्रणवः पणः।११५।
प्रमाणं प्राणनिलयः प्राणभृत्प्राणजीवनः।
तत्वं तत्वविदेकात्मा जन्ममृत्युजरातिगः।११६।
भूर्भुवःस्वस्तरुस्तारः सविता प्रपितामहः।
यज्ञो यज्ञोपतिर्यज्वा यज्ञाङ्गो यज्ञवाहनः।११७।
यज्ञभृद्यज्ञकृद्यज्ञी यज्ञभुग्यज्ञसाधनः।
यज्ञान्तकृद्यज्ञगुह्यमन्नमन्नाद एव च।११८।
आत्मयोनिः स्वयंजातो वैखानः सामगायनः।
देवकीनन्दनः स्रष्टा क्षितीशः पापनाशनः।११९।
शङ्खभृन्नदकी चक्री शार्ङ्गधन्वा गदाधरः।
रथाङ्गपाणिरक्षोभ्यः सर्वप्रहरणायुधः।१२०।

सर्वप्रहरणायुध ॐ नम इति। विष्णुसहस्रनामस्तोत्रम् समाप्त।

हरिः ॐ तत्सत! हरिः ॐ तत्सत! हरिः ॐ तत्सत!

२.५ नारायण आरती

पूजा की समाप्ति पर अंत में नारायण आरती का गान करें।

आरती - ॐ जय जगदीश हरे।

ॐ जय जगदीश हरे, स्वामी जय जगदीश हरे।
भक्त जनों के संकट, दास जनों के संकट, क्षण में दूर करे॥
ॐ जय जगदीश हरे।

जो ध्यावे फल पावे, दुख बिनसे मन का, स्वामी दुख बिनसे मन का।
सुख सम्पति घर आवे, सुख सम्पति घर आवे, कष्ट मिटे तन का॥
ॐ जय जगदीश हरे।

मात पिता तुम मेरे, शरण गहूं मैं किसकी, स्वामी शरण गहूं मैं किसकी।
तुम बिन और न दूजा, तुम बिन और न दूजा, आस करूं मैं जिसकी॥
ॐ जय जगदीश हरे।

तुम पूरण परमात्मा, तुम अंतरयामी, स्वामी तुम अंतरयामी।
पारब्रह्म परमेश्वर, पारब्रह्म परमेश्वर, तुम सब के स्वामी॥
ॐ जय जगदीश हरे।

तुम करुणा के सागर, तुम पालनकर्ता, स्वामी तुम पालनकर्ता।
मैं मूरख खल कामी, मैं सेवक तुम स्वामी कृपा करो भर्ता॥
ॐ जय जगदीश हरे।

तुम हो एक अगोचर, सबके प्राणपति, स्वामी सबके प्राणपति।
किस विधि मिलूं दयामय, किस विधि मिलूं दयामय, तुमको मैं कुमति॥
ॐ जय जगदीश हरे।

दीनबंधु दुखहर्ता, ठाकुर तुम मेरे, स्वामी ठाकुर तुम मेरे।
अपने हाथ उठाओ, अपने शरण लगाओ, द्वार पड़ा तेरे ॥
ॐ जय जगदीश हरे।

विषय विकार मिटाओ, पाप हरो देवा, स्वमी पाप हरो देवा।
श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ, श्रद्धा भक्ति बढ़ाओ संतन की सेवा॥
ॐ जय जगदीश हरे।

ॐ जय जगदीश हरे, स्वामी जय जगदीश हरे।
भक्त जनों के संकट, दास जनों के संकट, क्षण में दूर करे॥
ॐ जय जगदीश हरे ।

मनु जाहि राचेउ मिलिहि सो बरु सहज सुन्दर सावरो।
करुना निधान सुजान सीलु सनेहु जानत रावरो॥

एही भाँति गौरी असीस सुनी सिय सहित हिय हरषीं अली।
तुलसी भवानी पूजी पुनि-पुनि मुदित मन मन्दिर चली॥

जानी गौरी अनुकूल सिय हिय हरषु न जाइ कहि।
मञ्जुल मङ्गल मूल बाम अङ्ग फरकन लगे॥

आरती के बाद मंत्रोचारण से संपन्न कलस के जल का गृह के प्रत्येक भाग में छिड़काव करें। इसके बाद प्रसाद वितरण कर भोजन करें।